ज्यादातर लोग सफल इसलिए नहीं हो पाते क्योंकि वो दूसरों की बातों पर ज्यादा ध्यान देते है।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह

देहरादून मंगलवार 15 सितंबर 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

निवेश संबंधी फैसले

इस बार महामारी के चलते डेट इंस्ट्रूमेंट्स का प्रदर्शन खराब रहने का अंदेशा था तो ईटीएफ से बेहतर रिटर्न स्थिति को संभाल सकता था। मगर उसका हाल तो और भी बुरा निकला। यहां मामला ईटीएफ के चयन का भी है।

नवीन शाह।

एम्प्लॉयीज प्रॉविडेंट फंड ऑर्गनाइजेशन (ईपीएफओ) के निवेश संबंधी फैसले इधर कर्मचारियों की चिंता बढ़ाने लगे हैं। खबर है कि ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) के जरिए पिछले पांच साल से किए जा रहे निवेश का रिटर्न ईपीएफओ के लिए नेगेटिव में आया है। इस साल 31 मार्च की स्थिति के मुताबिक 1.03 लाख करोड़ रुपये के इक्विटी निवेश पर कुल मिला कर माइनस 8.3 फीसदी रिटर्न है जबकि सेंट्रल पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइजेज के ईटीएफ पर माइनस 24.36 फीसदी। ईटीएफ किसी म्युचुअल फंड जैसा ही एक इन्वेस्टमेंट फंड होता है, जिसकी खासियत यह है कि उसे कभी भी बेचा–खरीदा जा सकता है।

ईपीएफओ अपनी सालाना जमा रकम का 85 फीसदी डेट इंस्ट्रूमेंट्स (बॉन्ड्स, डिबेंचर, प्रॉमिसरी नोट आदि) में निवेश करता है जबकि 15 फीसदी ईटीएफ के जरिए इक्विटी निवेश यानी शेयर खरीदने में लगाता है। इक्विटी निवेश आम तौर पर ज्यादा जोखिम वाला होता है लेकिन जोखिम ज्यादा होने के कारण उसमें रिटर्न भी ज्यादा होने की उम्मीद की जाती है। इस बार महामारी के चलते डेट इंस्ट्रूमेंट्स का प्रदर्शन खराब रहने का अंदेशा था तो ईटीएफ से बेहतर रिटर्न स्थिति को संभाल सकता था। मगर उसका हाल तो और भी बुरा निकला। यहां मामला ईटीएफ के चयन का भी है।

सवाल उठ रहा है कि जिन ईटीएफ को चुना गया वे सही थे या नहीं, लेकिन बड़ी बहस इस बात को लेकर चली आ रही है कि आखिर लाखों कर्मचारियों की जीवन पर्यंत बचत को बाजार के जोखिम के अधीन कर देना कितना जायज है। पांच साल पहले जब यह फैसला किया गया था तब भी कर्मचारी संगठनों ने इसका विरोध किया था। तब यह दलील दी गई थी कि आज के जमाने में कोई भी निवेश बाजार के रिस्क से बाहर नहीं है। खुद कर्मचारी भी अपनी बचत प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बाजार में ही लगाते हैं। मगर कोई व्यक्ति सारी सूचनाएं जुटाकर उस आधार पर सोचे–समझे ढंग से अपने पैसे का निवेश करे, इसमें और लाखों कर्मचारियों की मेहनत की कमाई उनसे राय–मशविरा किए बगैर बाजार में झोंक देने में बुनियादी अंदर होता है।

बहरहाल, नेगेटिव रिटर्न की यह खबर न केवल निकट भविष्य में रिटायर होने वाले बल्कि तमाम कर्मचारियों को बेचौन कर सकती है। भारत की निरंतर बढ़ती अर्थव्यवस्था में नेगेटिव ग्रोथ एक बिल्कुल नई चीज है। इसी तरह नेगेटिव रिटर्न भी कोई ऐसा कॉन्सेप्ट नहीं है जिससे लोग परिचित हों और उसे सहजता से स्वीकार कर लें। हां, बैंकों के डूबने की खबरों से वे परिचित हैं और मेहनत की कमाई एक झटके में गायब हो जाने की मर्मांतक पीड़ा को समझ सकते हैं। पीएफ तो ऐसी निधि है जिस पर बुढ़ापे की पूरी आस टिकी रहती है। स्वाभाविक है कि ईपीएफओ सेंट्रल बोर्ड की अगले हफ्ते होने वाली बैठक पर सबकी निगाहें लगी होंगी। अच्छा होगा कि सरकार अपनी तरफ से पहल करके कर्मचारियों को यह विश्वास दिलाए कि ईपीएफ में आया पैसा पूरी तरह सुरक्षित है और निवेश संबंधी फैसलों की आंच आम कर्मचारियों तक नहीं पहुंचने दी जाएगी।

दूसरों पर खर्च करें

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। एक रिसर्च की मानें तो खुद पर पैसे खर्च की तुलना में अन्य लोगों, आमतौर पर दोस्तों या परिवार पर पैसा खर्च करने पर आपको ज्यादा खुशी मिलती है। इसलिए खुश रहने के लिए दूसरों की खुशियों को अपने से जोड़ना शुरू कर दें। इसके अलावा, धार्मिक दान करना या जरूरतमंदों की मदद करना भी खुशी पाने का एक बेहतर तरीका है। बहुत से लोग किसी त्योहार, पर्व या किसी विशेष मौके पर गरीबों को भोजन करवाते हैं, जो खुशी पाने का सबसे उत्तम तरीका है। कोशिश करें कि आप अपने लिए समय निकाले और फुरसत के समय को उन चीजों में लगाएं जो करना आपको पसंद है। जैसे बागवानी करना, फिल्म देखना, बच्चों के साथ खेलना, टीवी देखना, खाना बनाना या पार्टी करना। जबकि इस दिन को उपयोगी और खुशियों भरा बनाया जा सकता है।

संपादकीय

एकीकृत कमान बनाएं

लॉकडाउन के पहले भारत हैकरों के लिए टॉप टेन की लिस्ट में सातवें–आठवें नंबर पर था, मगर लॉकडाउन के बाद अब यह दूसरे–तीसरे नंबर पर आ चुका है। देखा गया है कि साइबर हमलों से निपटने में एक केंद्रीकृत प्रणाली ज्यादा अच्छे से काम करती है। अमेरिका, सिंगापुर और ब्रिटेन में ऐसे हमलों से निपटने के लिए सिंगल अंब्रेला ऑर्गनाइजेशन हैं, जबकि भारत में ऐसा नहीं है। भारत में अकेले केंद्र सरकार के पास साइबर हमलों से निपटने के लिए 36 अलग–अलग केंद्रीय कार्यालय हैं– हर मंत्रालय की अपनी साइबर सिक्युरिटी बॉडी। हर राज्य की अपनी सीईआरटी बॉडी अलग। इनके बीच कोऑर्डिनेशन की भारी कमी है। इसके चलते साइबर हमलों से ठीक से मुकाबला कभी नहीं हो पाता। अगर भारत को हैकरों का स्वर्ग नहीं बनने देना है तो सरकार को अमेरिका–इंग्लैंड की तरह यहां भी अपनी सभी साइबर सुरक्षा संस्थाओं को एक ही छत के नीचे लाना होगा। ऐप्स स्टोर चलाने वाले गूगल और ऐपल ने हैकरों की यह चाल पहचान ली और इसी लॉकडाउन के दौरान उन्होंने ढेरों ऐप्स भी बैन किए। इसके बावजूद इन हैकरों ने दूसरा तरीका निकाला और वे मोबाइल में चलने वाले ऐप्स में विज्ञापन देने लगे। इसके जरिए उन्होंने मोबाइल फोनों में सेंधमारी की। यह सेंधमारी अब भी चल रही है, जिसके चलते गूगल और ऐपल से दुनिया भर के ऐप्स डिवेलपर्स की कानूनी लड़ाइयां भी चल रही हैं। वरना, वर्क फ्रॉम होम तो अभी भी बहुतों का चल रहा है, ऑनलाइन क्लासेस भी ऑन हैं और हैकरों के सामने एकदम खुला मैदान है। उन्हें पता है कि भारत में साइबर लिट्रेसी महज 25 फीसदी है।

आज भी लगभग हर रोज फेसबुक की फ्रेंड लिस्ट में शामिल कोई न कोई व्यक्ति यह स्टेटस लगाए दिख जाता है कि प्रोफाइल क्लोन हो चुकी है, मेरे नाम से कोई पैसे-वैसे मांगे तो मत देना।

लैपटॉप से मोबाइल तक

राहुल पाण्डेय।।

कोरोना अटैक के बाद जब लॉकडाउन शुरू हुआ तो दुनिया भर के हैकरों ने कोरोना से भी बड़ा अटैक शुरू किया। भारत में तो इन्होंने लगभग हर क्षेत्र पर हमला किया, जिसमें लोगों की सोशल मीडिया प्रोफाइल की क्लोनिंग सबसे आम रही। आज भी लगभग हर रोज फेसबुक की फ्रेंड लिस्ट में शामिल कोई न कोई व्यक्ति यह स्टेटस लगाए दिख जाता है कि प्रोफाइल क्लोन हो चुकी है, मेरे नाम से कोई पैसे–वैसे मांगे तो मत देना। मध्य प्रदेश पुलिस की साइबर सेल का कहना है कि इस दौरान उनके यहां साइबर अटैक की जितनी शिकायतें आईं, उनमें 40 फीसद सोशल मीडिया प्रोफाइल क्लोनिंग की थीं। खुद उनके ही कई अधिकारियों की एफबी प्रोफाइल्स क्लोन हुईं। इंदौर के पास पोस्टेड एक एसपी की प्रोफाइल क्लोन करके बदमाशों ने उनके दूसरे एसपी दोस्त से दस हजार रुपये ठग लिए।

कोरोनाकाल में होने वाले साइबर अटैक्स से न तो आम आदमी बच पा रहा है, न सरकारें। भारत सरकार की रिपोर्ट है कि उसने पीएम केयर्स फंड से मिलती–जुलती छह से आठ ऐसी वेबसाइटें पकड़ी हैं, जो लोगों से धोखाधड़ी कर रही हैं। अब तक आठ हजार से भी अधिक

लोगों की ऐसी शिकायतें आ चुकी हैं, जिनके मुताबिक उन्होंने फंड में पैसे भेजे, लेकिन वे पैसे कहां चले गए, कुछ पता नहीं। आईबीएम की रिपोर्ट है कि कोरोना ने जब दुनिया को अपनी गिरफ्त में लिया, उसके बाद से दुनिया भर में होने वाले साइबर हमलों में सीधे–सीधे 4600 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। माइक्रोसॉफ्ट की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि कोरोनाकाल में हैकरों ने दुनिया भर के 90 फीसद बिजनेस को निशाना बनाया, जिसमें 28 फीसद पर उन्हें कामयाबी मिली।

मार्च के अंत में भारत में लॉकडाउन लगा और अप्रैल के पहले हफ्ते ही साइबर अटैक 260 फीसद बढ़ गए। इस बार ये हमले महानगरों तक सीमित नहीं रहे। साइबर सुरक्षा करने वाली एक फर्म के–7 ने टिएर–2 और टिएर–3 शहरों में सुरक्षा का इंतजाम करते हुए पाया कि हर दस हजार यूजर्स में से 250 पर गंभीर किस्म के साइबर अटैक हुए। ये हमले फर्जी ईमेल और फर्जी वेबसाइट के जरिए तो हुए ही, मोबाइल फोन के जरिए भी जमकर हुए। लॉकडाउन में अधिकतर लोगों ने वर्क फ्रॉम होम शुरू किया, जिसमें उनके कंप्यूटर या लैपटॉप को ऑफिस में लगे उनके कंप्यूटर से वाया रिमोट जोड़ा गया। हैकरों ने इस रिमोट सिस्टम को खास तौर पर टारगेट किया और रिमोट ऐक्सेस ट्रोजन छोड़कर मनमानी फिरौती वसूली। अप्रैल में आई एक रिपोर्ट के मुताबिक लोग इन चक्करों में फंसकर तब तक आठ करोड़ रुपये से अधिक की फिरौती दे चुके थे।

पिछले महीने अहमदाबाद में पुलिस ने चंदलोडिया में 18–19 साल के तीन किशोरों को गिरफ्तार किया। इन लोगों ने मोबाइल ऐप टेलीग्राम के जरिए फर्जी डिस्काउंट का ऑफर देकर 1100 लोगों से 18 लाख रुपए वसूल लिए थे। यह काम इन्होंने लॉकडाउन के चार महीनों में किया। लॉकडाउन में साइबर हमले का शुरुआती केंद्र केरल बना, लेकिन दूसरा महीना खत्म होते–होते कोरोना की ही तरह साइबर हमले भी पूरे देश में फैलते गए।

सूडोकु नवताल-5468

✱✲✲✲✲ सरल

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5467 का हल

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1

अपना ब्लॉग

मोबाइल पर लोन देने का ऑफर

मोहन। गुजरात पुलिस ने एक ऐसे गैंग को भी पकड़ा जो दिल्ली–एनसीआर में ऑनलाइन लोन देने की ठगी कर रहे थे, वह भी डॉलरों में। वे मोबाइल पर लोन देने का ऑफर देते थे और फंसने वाले की सारी डिटेल केवाईसी के जरिए लेकर उसके एकाउंट से पैसे निकाल लेते थे। दिल्ली में जून तक 14 हजार से अधिक ऐसे मुकदमे दर्ज हुए। लॉकडाउन में साइबर हमलों का सबसे आसान और बड़ा शिकार लोगों के हाथ में मौजूद मोबाइल फोन बने। हैकरों ने ढेरों ऑनलाइन क्लासेस को निशाना बनाया। दिल्ली और चंडीगढ़ से चलती क्लास में पॉर्न क्लिप्स चला देने की कई खबरें आईं। इसका कोई माली नुकसान तो नहीं हुआ लेकिन बच्चों पर इसका काफी बुरा प्रभाव पड़ा। दूसरी ओर बाकी लोगों के मोबाइल को हैकरों ने ऐप्स के जरिए निशाना बनाया। साइबर अटैक में मुकदमे तभी दर्ज होते हैं, जब लोगों को ठीक–ठाक माली नुकसान होता है।